आरती बृहस्पतिवार की

ॐ जय बृहस्पति देवा, स्वामी जय बृहस्पति देवा ।
छिन-छिन भोग लगाऊं कदली फल मेवा । ॐ जय...
तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।
जगतपिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी । ॐ जय...
चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता ।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता । ॐ जय...
तन मन धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े ।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े । ॐ जय...
दीन दयाल दयानिधि भक्तन हितकारी ।
पाप दोष सब हर्ता, भव बन्धन हारी । ॐ जय...
सकल मनोरथ दायक, सब संशय हारी ।
विषय विकार मिटाओ, सन्तन सुखकारी । ॐ जय...
जो कोई आरती प्रेम सहित गावे ।
जेष्ठानन्द कन्द सो निश्चय पावे । ॐ जय...

विवरण

भगवान बृहस्पति देव की जय हो । कदली,फल, मेवा, तरह-तरह के चीजों से मैं आपको भोग लगाऊँ । आप सबके मन की बात को जानने वाले हो तथा सबके अन्दर आप ही रहते हो । सम्पूर्ण विश्व के ईश्वर हो (पूरे संसार के पिता हो) तथा सबके स्वामी भी हो ।

आपके निर्मल चरणों के अमृत का जो पान कर लेता है, उसके सभी पाप धुल जाते हैं । आप सभी मनोरथों को पूरा करने वाले हो तथा अपनी कृपा से सबका भरण-पोषण करते रहते हो । जो अपना तन-मन-धन सब आप पर न्योछावर करके, आपकी शरण में आ जाता है, तब आप प्रगट होकर उसके द्वार पर आकर खड़े हो जाते हैं ।

आप गरीबों पर दया करने वाले हो, इसीलिए आपको दयानिधि कहा गया है, तथा अपने भक्तों का हमेशा हित चाहते हो, उसके पाप एवं दोष सब हर लेते हो, तथा जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा दिला देते हो । आप सभी मनोरथों को पूरा करने वाले हो एवं सभी संकटों को हरने वाले हो ।

हे देव ! हमारे अन्दर जो भी बुरे विकार हैं, उन्हें मिटा दो एवं हमें सुखी बना दो । आपकी ये आरती जो भी प्रेम सहित गाता है, उसे निश्चय ही सुन्दर फल मिलता है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.